सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य – दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास

b. भाषायी कौशलों का महत्व

c. भाषा के कौशल

d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन

e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग

f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल

g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल

b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर

c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर

d. वाचन शिक्षण की विधियाँ

e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें

f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल

b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता

c. लेखन कौशल का महत्व

d. लेखन शिक्षण का समय

e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा

f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ

g. शुद्ध लेखन तत्व

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन

सुनने उद्देश्य से बालकों में जिस प्रकार के अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन होते हैं, वे निम्नांकित हैं–

(1) सुनने के उद्देश्य व अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन–भाषायी कौशलों में महत्वपूर्ण स्थान है 'सुनने का'। अतः बालकों में सुनने की प्रवृत्ति होती है तथा उसकी जिज्ञासा पूर्व सुनने पर ही पूरी होती

Scanned with CamScanner

है। बालक ही क्या सभी व्यक्ति सुनने को उत्सुक रहते हैं, सुनकर ज्ञान प्राप्त करना एक मानवीय पहलू है। श्रवणीय सामग्री को सुनाकर अर्थग्रहण कराना, भाषा शिक्षण का पहला कौशलात्मक सामान्य उद्देश्य है। इस सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति किस सीमा तक होती है,, इसका अनुमान बालकों में उत्पन्न अपेक्षित परिवर्तनों से ही लगाया जा सकता है। ये परिवर्तन निम्न हैं–

(i) बालक सुनने की सामग्री को बड़े ध्यान से सुनता है।

(ii) बालक सुनने में शिष्टाचार का पालन करता है अर्थात् बालक कक्षा में हो या बालसभा, में प्रार्थना सभा में हो या अन्य किसी स्थल पर, बालक अध्यापक कथन या प्रवचन को सुनने में किसी प्रकार का व्यवधान पैदा नहीं करता।

(iii) बालक सुनते समय बड़े मनोयोग से दत्तचित्त होकर सुनता है।

(iv) बालक ऐसी मनःस्थिति बनाये रखता है कि कटी हुई बात को पूर्णतः समझ सके।

(v) बालक वक्ता के स्वराघात, बलाघात और स्वर में उतार-चढ़ाव के अनुसार अर्थग्रहण करने की योग्यता पैदा कर लेता है।

(vi) बालक वक्ता के कथन में प्रयुक्त शब्दों, उक्तियों, मुहावरों का प्रसंगानुकूल भाव समझने की चेष्टा करता है।

(vii) बालक सुनी हुई सामग्री के विषय को जान लेता है।

(viii) बालक सुनी सामग्री में से महत्वपूर्ण विचारों, तथ्यों और भावों का चयन कर सकता है।

(ix) बालक इन विचारों, तथ्यों और भावों के बीच परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर सकता है।

(x) बालक सुनी हुई सामग्री का सारांश ग्रहण कर सकता है।

(xi) बालक सुनाने वाले के मनोभावों को समझ सकता है।

(xii) बालक सुनाने वाले अभिव्यक्ति के ढंग को समझ सकता है।

इस प्रकार के कौशलों और योग्यता का विकास शिक्षक वार्तालाप, वाद-विवाद, प्रवचन, भाषण, आदेश, कविता पाठ आदि के माध्यम से कराता है। जिन विद्यालयों में रेडियो व टेलीविजन की सुविधा है वहाँ प्रसारणों के समय अपने प्रवचन द्वारा अच्छी प्रकार से अर्थ ग्रहण कराने का प्रयास करता है।

(2) सुनने की प्रवृत्ति और उसकी उपयोगिता–बालकों में कहानी सुनने की प्रवृत्ति स्वभावजन्य होती है, वह माता-पिता व परिजनों से कहानी सुनने की जिज्ञासा रखता है तथा परिजन उन्हें कहानियाँ भी सुनाते हैं। बालक माता-पिता की बातों को बड़े गौर से सुनता है तथा उन बातों पर विचार करता है तथा अपने मस्तिष्क में उन विचारों को सजाये रखता है अर्थात् हर बालक अपनी माँ-दादी से रात सोते समय अवश्य कहानियाँ सुनने में रुचि लेते हैं। इस प्रवृत्ति का लाभ उठाने के उद्देश्य से शिक्षक को भी कक्षा में छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाते रहना चाहिये, इसके दो लाभ हैं–(i) मनोरंजन हो जाता है, (ii) कहानी से विविध घटना की जानकारी हो जाती है।

भाषा शिक्षण में कहानी की शिक्षा तीन रूपों में दी जाती है–पाठ्य-पुस्तक और कहानी शिक्षण, सहायक पुस्तक और कहानी शिक्षण, रचना शिक्षण और कहानी रचना। कहानी कहकर शिक्षक निम्न उद्देश्यों की पूर्ति करता है–

(i) बालकों के शब्द भण्डार एवं सूक्ति भण्डार में वृद्धि करता है।

(ii) बालकों में कल्पना शक्ति तथा निर्णय शक्ति का विकास करता है।

(iii) बालकों को यथार्थ जीवन का परिचय देता है।

Scanned with CamScanner

(iv) बालक को कक्षा शैली का परिचय देता है।

(v) कहानियों से बालकों का मनोरंजन करता है तथा उनमें अपना आत्मविश्वास उत्पन्न करता है।

इसी प्रकार कविता का सस्वर पढ़कर शिक्षक उसके भावों को समझने के लिए बालकों को प्रेरित करता है। बालकों में गीत बड़े प्रिय होते हैं। इन गीतों को सुनकर उन्हें बड़ा आनन्द आता है। अतः शिक्षक को बालकों की गीत सुनने की प्रवृत्ति का भी उचित उपयोग करना चाहिये। शिक्षक को दरबारों, काव्य गोष्ठी, कवि सम्मेलन करके बालकों को कविता सुनने के अवसर प्रदान करना चाहिये। अध्यापक को कक्षा में कविता शिक्षण करते समय अपने आपको भूल जाना चाहिये और कवि के प्रतिनिधि के रूप में खड़े होकर उसके भावों की अनुभूति बालकों को सस्वर वाचन द्वारा करानी चाहिये।

(3) सुनने के विभिन्न आयाम—बालकों में सुनने के कौशल को उत्पन्न करने के लिए वार्तालाप, वाद-विवाद, भाषण, प्रवचन, कविता, आकाशवाणी प्रसारण आदि का आयोजन करना चाहिये। बालक के सामने सुनने के जितने अधिक आयाम होंगे, सुनने के कौशलों का उतना ही अधिक विकास सम्भव हो सकेगा।

बालक को अधिक-से-अधिक सुनने के अवसर मिले इस प्रकार का वातावरण शिक्षक को उत्पन्न करना चाहिये।

(4) शब्दों और वाक्यों का अर्थग्रहण—शब्दों और वाक्यों में सार्थकता ही उसका प्रधान लक्षण है। जिस शब्द में सार्थकता नहीं है, उसमें निरर्थक ध्वनि होती है। निरर्थक ध्वनियों को शीघ्र ही भुला सकते हैं। सार्थक ध्वनियाँ ही मस्तिष्क में विचार या भाव बिम्ब निर्माण करते हैं। अतः हिन्दी भाषा शिक्षण करते हुए शिक्षक का कर्त्तव्य बन जाता है कि वह उन भाव व विचार बिम्बों को स्थूल रूप दें।

शिक्षक शब्दों के केवल उन अर्थ का ही बोध न कराये जो सीधा-सादा और प्रचलन में है। शब्द शक्ति के अनुसार उसके लाक्षणिक और व्यंजक अर्थ भी होते हैं। उल्लू, गधा, गाय आदि शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग किया जाता है जैसे वह बड़ा उल्लू है, ऐसा गधा कहीं नहीं देखा जैसे मुन्नू है, लड़का जैसे गाय है। इस प्रकार की व्यंजना के आधार पर शब्द का अर्थ भिन्न हो जाता है। इसी प्रकार "मास्टर साहब ! चार बज गये" इसका अर्थ यह नहीं है कि घड़ी ने टन-टन-टन-टन चार ध्वनियाँ उत्पन्न कर दी हों। इसका व्यंग्यार्थ है कि चार बज गये अब तो छुट्टी कर दी जाय। इस प्रकार सुने हुए वाक्यों के अर्थ ग्रहण करने में कठिनाई नहीं आये इसलिए शिक्षक को धीरे-धीरे प्रवचन, प्राक्कथन, सहायक कथन और प्रश्न पूछने चाहिये। कक्षा में पूछे गये प्रश्नों की पुनरावृत्ति करना न पड़े इसलिए प्रश्न धीरे, संयत तथा स्पष्ट रूप से पूछे या बोले जाएँ।

(5) वाक्यों में शब्दों के क्रम का अर्थग्रहण—वाक्य चाहे बोला गया हो या लिखित हो वह तभी अर्थ देता है जब उसके शब्दों में क्रम होता है। क्रम का अर्थ है कि पदक्रम शब्दों के सार्थक होते हुए भी यदि उनको पदक्रम का ध्यान रखे बिना ही उच्चारित किया जाता है तो सुनने वाला उसका अर्थग्रहण नहीं कर पाता है। हिन्दी भाषा में वाक्यों में जो शब्द पदक्रम से रखे जाते हैं, वह संस्कृत या अंग्रेजी भाषा के क्रम से भिन्न हैं। शब्दों के अनुकूल क्रम के अभाव में सभी भाषाओं में अर्थ का अनर्थ हो जाता है जिससे अर्थग्रहण करने में कठिनाई होती है। यहाँ निम्न वाक्यों में पदक्रम की अशुद्धियाँ हैं—

(क) यह कहकर मैंने जितने आदमी दुकान में बैठे थे, उन सबकी ओर देखा।

(ख) सभी वर्ग के लोग उपस्थित थे।

Scanned with CamScanner

(6) विचारों की सार्थकता—भाषण के अर्थ को ग्रहण करने के लिए आवश्यक है कि उनके विचार, तथ्य और भाव क्रमिक ढंग से प्रस्तुत किये जाएँ अन्यथा श्रोता इन विचारों, तथ्यों अथवा भावों के बीच सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकेगा। किसी भी प्रकार के विचारों की सार्थकता उनके बीच सम्बन्धों पर निर्भर करती है। जिस प्रकार किसी भी पुस्तक में एक अनुच्छेद के वाक्य आगे के वाक्यों से सम्बन्धित होते हैं तथा एक पूरे अनुच्छेद में एक विचार होता है उसी प्रकार भाषण, प्रवचन, वार्तालाप तथा संवाद और कथोपकथन सामग्रियाँ विचारों के निश्चित क्रम में होती हैं।

(7) कथोपकथन को समझना—सुनने के कौशल के लिए यह आवश्यक है कि नाटक, उपन्यास, कहानी आदि में जो कथोपकथन प्रयोग में आया है उसे बालक अच्छी तरह समझ सके।

Scanned with CamScanner